ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 308-310**
ISSN NO.- 2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.- 2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- July-Sept.-2021

गोरखदर्शन में गुरु–महिमा

डॉ0 राघवेन्द्र प्रताप मिश्र E-mail:aaryvart2013@gmail.com

Received- 22.07.2021, Revised- 25.07.2021, Accepted - 02.08.2021

सारांश : ***भारतीय वाङ्मय एक सनातन जीवन–यात्रा का लेखा–जोखा है। सभ्यताओं का उत्कर्षापकर्श, जन–समुदाय का सांस्कृतिक उत्थान–पतन और धार्मिक आन्दोलन के आधार इतिहास के झरोखे से झाँकते रहते हैं। ऋशि, महर्शि, मुनि–मनीशी और योगी, आत्म तत्वविवेकी– ये सभी शब्द पर्यायवाची। इनके भीतर ज्ञान–ज्योति निरन्तर प्रदीप्त रहती है। युग के पुकार के अनुसार (युगधर्मसम्मत) सांस्कृतिक विप्लव में इनकी दिव्य अमृतवाणी दिशा–निर्देश करती है। योगी समग्र जगत् को सूक्ष्म रूप से अपने अन्तर्जगत् में अवस्थित पाता है और अपनी आत्मज्योति में समग्र जगत् को आलोकित अनुभव करता है। इस विकसित–ज्योति भावभूमि को उपनिशद् के शब्दों में निरूपित कर सकते हैं–***

त्वमेद भाक्तमनुभति सर्व
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।
(श्वेताश्वतरोपनिशद् 6।14)'

कुंजीभूत शब्द–सनातन जीवन–यात्रा, जन–समुदाय,सांस्कृतिक उत्थान।

भारतवर्ष का उत्तरांचल अनेक युग प्रवर्तक दार्शनिक सतं–महात्माओं और योगियों का जन्म दाता रहा है। यदि इस अंचल में साम्राज्य–वृद्धि के लिये लोम हर्शक युद्ध हुए तो साथ–ही साथ जनसमुदाय को पारमार्थिक तथा आध्यात्मिक दिशा–निर्देश के लिये तत्वदर्शियों का उद्भव भी हुआ। महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, संत कबीर, गोस्वामी तुलसीदास आदि मनीशियों का कर्मक्षेत्र भी यही रहा। इस परम्परा की अटूट कड़ी के रूप में नाथ सम्प्रदाय में गोरखनाथ जी युग प्रवर्तक महायोगी महासिद्ध तत्वदर्शी के रूप में प्रख्यात है। इसी विकसित चेतना के आकाश में समुद्दीप्त नक्षत्र के रूप में गोरखनाथ जी योग के विशेषतया नाथ येाग के दिव्य परिमण्डल को प्रभावित एवं 'आलोकित है। उन्होंने अपने ज्योति–र्मय प्रभामण्डल से अज्ञान–तिमिराच्छन्न जन–जीवन को ज्योतित कर उसे श्रेयस्कर बना दिया। शिवोपदिश्ट नाथ योगामृत से उन्होंने जन–जन को अभिशिक्त किया। विलक्षण योग सिद्धि और स्वसंवेद्य अलख निरंजन तत्व के सरस अमृत फल के मिठास–माधुर्य से जन–जन की आध्यात्मिक, वाचिका, मानसिक और कायिक तृप्ति का योग विधान प्रस्तुत किया। नाथयोगामृत के प्रचार–प्रसार के लिये उन्होंने भारत की एकान्त शान्त विशिश्ट तपः स्थलियों में, गिरिगुफाओं, नदियों के पावन तट पर नाथसिद्ध पोठों की स्थापना की तथा योगवाङ्मय की अनेकानेक असाधारण प्रमाणिक ग्रन्थों के प्रणयन से समृद्धि बढ़ायी। जलवायु की विभिन्नता भौगोलिक सीमा और सम्प्रदाय तथा जाति आदि की सकीर्ण परिधि से बाहर निकल कर एक ऐसे स्वस्थ विचारक्षेत्र दार्शनिक–सांस्कृतिक परिवेश का निर्माण किया, जहाँ मानवता का निर्मल स्वरूप स्थापित हो सकता, साधना के सुगम विस्तृत पथों में जीवन का दिशानिर्देश मिला। गोरखनाथ जी द्वारा स्थापित योग साधना के प्रशस्त पथ पर चलने वालों ने अपने जीवन में सच्चिदानन्द स्वरूप अलख निरंजन का दर्शन किया।

गुरु महिमा– महायोगी गोरखनाथ की साधना–पद्धति योग–प्रधान है। योग साधना द्वारा पूर्ण शिवत्व की प्राप्ति गोरखनाथ एवं उनके सम्प्रदाय द्वारा मानव जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है। सच्चे अर्थ में, यही योग है। गोरखनाथ ने योग की सफलता में गुरु को सर्वप्रमुख कारक माना है। इसी कारण उनके द्वारा रचित प्रमुख ग्रन्थों में गुरु की महिमा को ग्रन्थ प्रणयन के प्रारम्भ में ही स्पश्ट किया गया है। 'गोरखशतक' में गोरखनाथ ने गुरु की वन्दना की है–

श्रीगुरुं परमानन्दं, वन्दे स्वानन्दविग्र म्।
यस्य सान्निध्यमात्रेरग चिदानन्दायते तनुः।।
(गोरक्ष शतक–1)

अर्थात् मैं अपने गुरुदेव का नमन (वन्दना) करता हूँ, जो साक्षात् परमानन्द है, जिनके सान्निध्य मात्र से ही यह शरीर परमानन्द, चिदानन्द, परमात्म स्वरूप हो जाता है।

'गोरखबानी' में संकलित 'मछींद्र–गोरख–बोध' में गोरखनाथ जो अपने गुरु योगीन्द्र मत्स्येन्द्रनाथ से जिज्ञासावश पूछते हैं कि "स्वामी आदि का कौन गुरु" तो मत्स्येन्द्रनाथ कहते हैं– "अबधू आदि का अनादि गुरु।" गुरु आदि– अन्त से परे परमतत्व में प्रतिश्ठित साक्षात् शिव हैं। यह शिव ही हैं, जिन्होंने सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है। उनकी दिव्यता, माधुर्य एवं ऐश्वर्य की रसानुभूति योग सिद्ध सद्गुरु की कृपा से ही सम्भव है। गोरखनाथ के अनुसार साधक करोड़ों शास्त्रों का अध्ययन करले, या विज्ञान प्राप्त कर ले, या अनेक तर्क में निपुण हो, या आचार में तत्पर हो, या चारों वेदों में पारंगत हो अथवा वेदान्त श्रवण में ज्ञाननिश्ठ हो, या सोऽहं–सोऽहं हंस, मन्त्र को सिद्ध करले, या जीवात्मा परमात्मा में अभेदता की अनुभूति करे, या ध्यान लगावे, या जप करे परन्तु गुरु के उपदेश से ही योगी सिद्ध होता है। (सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, 5।31,32,33) गोरखनाथ कहते हैं कि यह साक्षात् शिव का कथन है कि परमपद की प्राप्ति में गुरु की कृपा से बढ़कर दूसरा कोई उपाय नहीं है, नहीं है–यह साक्षात् शिव का आदेश है, शिव का आदेश है, शिव का आदेश है, शिव का आदेश है–

प्रवक्ता– दर्शनशास्त्र विभाग, बुद्ध पी0जी0 कॉलेज, कुशीनगर (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

अतएव शिवनोक्तम्। न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोधिकं शिवशासनतः शिव शासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः।''

(सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, 5।66)

'गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह' में उल्लिखित है कि नाथ योग साधना में समस्त श्रेयों का मूल 'गुरु' ही है। 'गुरु बिन ग्यानं न पायला रे भाईला (गोरखबानी पद–4) अर्थात्, बिना गुरु के ज्ञान की प्राप्ति नितान्त असम्भव है। गुरु की असीम कृपा से चितविश्रान्ति प्राप्त होती है। फलतः योग साधन में तत्पर आत्म स्वरूप में निमग्न योगी को निरुत्थान (जागरण) सुलभ होता है जिसके परिणामस्वरूप योगी को तत्काल ही दुर्लभ परमपद प्रकाशित (प्रत्यक्ष हो जाता है।) इस परमपद में व्यष्टि–पिण्ड और परमात्म, पिण्ड–ब्रह्माण्ड में सामरस्य स्थापित होता है। उसमें तनिक भी संशय नहीं है। सिद्ध सिद्धान्त पद्धति 5। 82,83)

एक तरफ जहाँ महायोगी गोरखनाथ ने परमपद की प्राप्ति में सद्गुरु के सान्निठव को अनिवार्य बताया है। तो दूसरी तरफ ज्ञानहीन, मिथ्यावादी तथा आडम्बर युक्त गुरु को सर्वथा त्याज्य बताया है। क्योंकि जब वह स्वयं परमात्म निश्ठा से अनभिज्ञ है तो दूसरों को किस प्रकार सन्मार्ग दर्शन करा सकता है–

''ज्ञानहीनो गुरुस्त्याग्यो मिथ्यावादीविडम्बकः।
स्वविश्रान्ति न जानाति परेशां स करोति किंम्।''

(सिद्ध सिद्धान्त पद्धति–5। 63)

इस प्रकार ज्ञानहीन गुरु की शरण में कदापि नहीं जाना चाहिये। गुरु के रूप में क्षीरसागर के तट पर देवी पार्वती को महायोगज्ञान का उपदेश दिया, जिसे मत्स्येन्द्रनाथ के दैवयोग से श्रवण कर उस उपदेश को अपने शिश्य गोरखनाथ को प्रदान कर नाथ योग साधना में गुरु की महत्व को उद्घाटित किया, जिसके फलस्वरूप नाथ योग सम्प्रदाय में सद्गुरुवरण की परम्परा अक्षुण्ण एवं महान है। गोरखनाथ स्पश्ट कहते हैं–

''प्रथमे प्ररगऊँ गुरु के पाया, जिन मोहि श्रात्मब्रह्म लशाया।
सतगुरु सबद कह्या ते बूमक्या, तिहूँ लोक दीपक मनि सूझया।।''

(गोरखबानी, प्रारग संकली–1)

अर्थात्, सर्व प्रथम मैं अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के चरणों में नतमस्तक होता हूँ जिनकी महान कृपा से मुझे अपने ही शरीर में विद्यमान आत्म ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ। सद्गुरु के उपदेश से ही मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ और तीनों लोक मेरे शन–नेत्र में प्रकाशित हो गये। महायोगी गोरखनाथ ने मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि सर्वप्रथम मनुष्य को 'यह मैं हूँ' या, 'यह मेरा है', इस विचार (अहंकार) का ही परित्याग करना चाहिये। मानव–योनि में जन्म अनेकानेक जन्मों के पुण्य का फल है। यह–बार–बार नहीं मिलता, इसलिये मनुश्य का जन्म पाकर योग की साधना करनी चाहिये। वास्तविक योग की प्राप्ति परमार्थ ज्ञानी सद्गुरु के सत्संग से ही सुलभ है–

''श्रापा भांजिबा सतगुर पोजिबा, जोगपंथ न करिबा हेला।
फिरि फिरि मनिशा जनम न पायबा, करिले सिध पुरिससं मेला।''

(गोरखबानी, सबदी–203)

गुरु को महिमा वर्णन से परे है। गुरु अपनी कृपामयी दृष्टि से करुणा की अखण्ड दृष्टि करते हुए शिवस्वरूप स्वसंवेद्य परमपद को प्रकाशित कर शिश्य के आठ पाशों (जरा, जन्म, मृत्यु, व्याधि, काम, क्रोध, मोह, अविद्या) का नाश कर देता है। वह अपने सद्ज्ञान द्वारा शिश्य के ह्रदय में विद्यमान सभी प्रकार के विकारों को समाप्त करता है। इस प्रकार गुरु परब्रह्म हैं, परमगति ओर पराविद्या है, परमपद और परमसम्पत्ति है। वही योग के महाज्ञान का महान उपदेश्टा हैं, इसी कारण वह सदैव वंदनीय और उपास्य है। इसी कारण गोरखनाथ गुरु के चरणों में सदैव नतमस्तक है–

'अतएव परमपदप्राप्त्यर्थं स सद्गुरुः सदावन्दनीयः

(सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, 5। 60)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्वेताश्वरोपनिषद् 6/14.
2. गोरक्ष शतक–1.
3. सिद सिद्धान्त पद्धति–5/31,32,33.
4. गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह–गोरखनाथ मंदिर पृ0 114.
5. गोरखबानी–गोरखनाथ मंदिर, पद–4.
6. गोरखबानी, प्रारग संकली–1.

*****